आपातकाल में सृजन फुलवारी

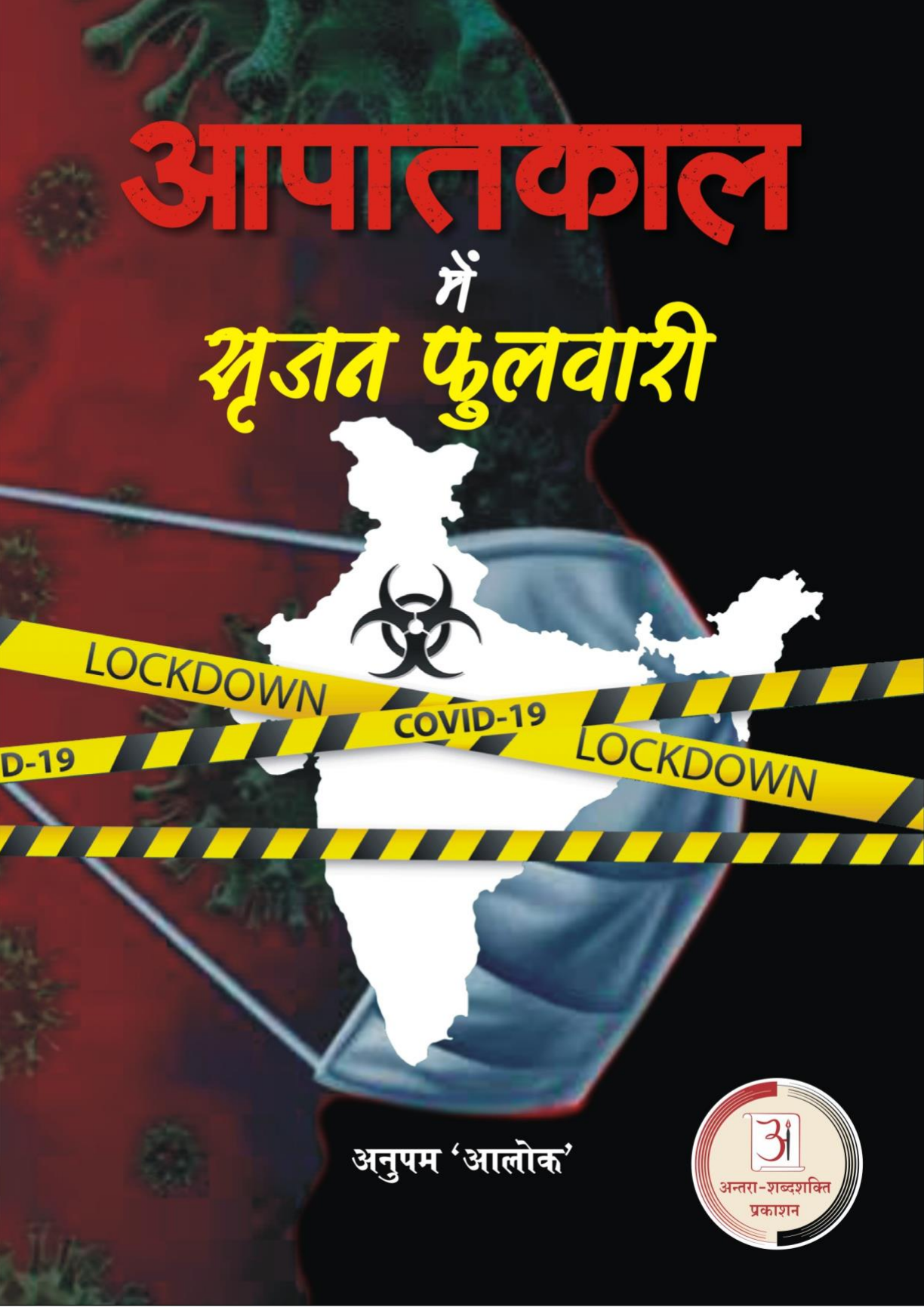

अनुपम 'आलोक'

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

अनुपम आलोक

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-134-3

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159

मोबाईल- 9424765259

ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com

वेबसाईट- www.antrashabdshakti

प्रथम संस्करण- 2020, अनुपम आलोक

मूल्य- 50.00 रूपये

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY ANUPAM ALOK

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेंगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	रिमझिम-रिमझिम बरसे सावन	6
2.	तुम बिन सूनी मन की सरगम	7
3.	श्रम की पूंजी जिनका धन है	8
4.	हम-तुम गढैं तन ऋचाएँ	9
5.	तुम बिन मैं कैसे जी पाऊँ	10
6.	बसंत गीत	11
7.	मार सको तो मारो	12
8.	यह कभी सोचा न था	13
9.	जब भी तेरी याद सताई	14
).	ज़िंदगी पीर बन आजमाने लगी	15
1.	जीवन पथ है कठिन परीक्षा	16
2.	तुम पर अपना प्यार लुटाने	17
3.	हो जा सखि तैयार	18
4.	और मैं ठगा-ठगा, दर्द से सिहर गया	20
5.	कुण्डलिया खण्ड	21
6.	मुक्तक खण्ड	22

रिमझिम-रिमझिम बरसे सावन

रिमझिम-रिमझिम बरसे सावन, छलके प्रेम गगरिया रे।
दूर न जाना चौमासे में, मुझसे ओ सँवरिया रे।

कोयल कुहके, रटे पपीहा,
दमके-दामिन अम्बर।
काले मेघ हुमक जब बरसें,
आग लगे मेरे अन्दर।
काँटों से भर जाती बालम,
तुम बिन प्रेम डगरिया रे।
दूर न जाना चौमासे में, मुझसे ओ सँवरिया रे।

नयनों में डोरे ले आती,
यौवन की अँगड़ाई।
डस-डस जाए मुई मुझे तब,
नागिन बन तन्हाई।
बिच्छू मारे डंक सेज पर,
जलती प्रेम नगरिया रे।
दूर न जाना चौमासे में, मुझसे ओ सँवरिया रे।

बरखा की बूँदे जब पड़ती,
साजन मेरे तन पर।
सुलगें तब अरमान हमारे,
ताकें नयन डगर पर।
पुरवैया तू जाकर ले आ,
बालम की खबरिया रे।
दूर न जाना चौमासे में, मुझसे ओ सँवरिया रे।

तुम बिन सूनी मन की सरगम

तुम बिन सूनी मन की सरगम,
रूठा सा संगीत।
सुनाऊँ अब किसको मैं गीत।

पुरवा-पवन मदिर गति बहकर,
तेरा तन छू जाए।
तेरे रूप कंवल को लखने,
भोर धरा पर आए।
रूठी भोर, तपन दे पुरवा, बिन तेरे मनमीत।
सुनाऊँ अब किसको मैं गीत।

सेंदुर सिसके सिंगरौटे से
कजरौटे से काजल।
राह निहारे देहरी तेरी,
कब छनकेगी पायल।
सुन परदेशी अब तेरे बिन, तन्हा मेरी प्रीत।
सुनाऊँ अब किसको मैं गीत।

भूल गया सब हृदय व्याकरण,
अलंकार सब खोए।
रीत गयी है शब्द वर्तनी,
सारे भाव बिलोए।
बिछुड़ अंतरा अब मुखड़े से, रहा विरह को जीत।
सुनाऊँ अब किसको मैं गीत।

श्रम की पूंजी जिनका धन है

श्रम की पूंजी जिनका धन है, कर्मनिष्ठ, अतिशय अनमोल।

जाति, धर्म, मजहब से ऊपर, मुखरित जिनके मुख के बोल।
राजमहल से.. रंगमहल तक, देवालय से... मदिरालय तक-
चुका न पाये आज तलक भी, जिनकी .. श्रमबूंदो का मोल।
कलम आज उनकी जय बोल। कलम आज उनकी जय बोल।

जिनकी जीवन बगिया में बस, नागफनी... की..... झाड़ें हैं।
जिनकी आँखों में सपने कम, बस.... आँसू के..... बाड़े हैं।
सांसे जिनकी.... गिरवीं रखी, कदम.... कदम..... पर झोल।
कलम आज उनकी जय बोल। कलम आज उनकी जय बोल।

कुनबे मे.. है...भूख... का डेरा, आभावों... का.. पग-पग फेरा।
खुशियाँ.. जैसे... रुठ चुकी हों, किस्मत जैसे.. फूट.. चुकी हों।
स्वयं विधाता... जिनके जीवन, जहर.... रहा... है..... घोल।
कलम आज उनकी जय बोल। कलम आज उनकी जय बोल।

मंदिर, मस्जिद और शिवाले, देख.. न पाये.. जिनके छाले।
महलों के गुंबद की अरुणिम, कर न सकी जिनके घर स्वर्णिम।
जिनको श्रम का मिले न आधा, अब.... तक....जग में... मोल।
कलम आज उनकी जय बोल। कलम आज उनकी जय बोल।

हम-तुम गढ़ें तन ऋचाएँ

चलो एक-दूजे के उर में समाएँ।
बढ़ो प्रीत, हम-तुम गढ़ें तन ऋचाएँ।

धवल है गगन और,
धवल हैं दिशाएँ।
धवल है धरा और,
धवल मन निशाएँ।
है शशि का निमंत्रण,
प्रणय वाटिका में-
पढ़ें पूर्ण शशि में प्रणय कामनाएँ।
बढ़ो प्रीत, हम-तुम गढ़ें तन ऋचाएँ।

रजत रेशमी सेज,
अंबर के नीचे।
तारों के तोरण हैं,
चंदा ने खीचे।
मन का पपीहा,
कहाँ पी पुकारे-
विभो, आज अधरों से पढ़लें प्रथाएँ।
बढ़ो प्रीत, हम-तुम गढ़ें तन ऋचाएँ।

कहाँ हो, पूकारुँ,
तुम्हे आज सविते।
मृदुल मन मयूरी,
करुण कांति कविते।
मै आकंठ डूबा,
विरह में तुम्हारे-
उदधि चिर मिलन की सदा को बुझाएँ।
बढ़ो प्रीत, हम-तुम गढ़ें तन ऋचाएँ।

तुम बिन मैं कैसे जी पाऊँ

प्रश्न शेष रह गए बहुत से-
उत्तर मैं कैसे गढ़ पाऊँ।
तुम बिन प्रिय, कैसे जी पाऊँ....!

अनजाने दिल में बस जाना।
अपना रूठा मीत मनाना।
आँखों की बाजीगर सबकुछ-
भूल गईं तुम मुझे बताना।

कटे पंख सा, पक्षी प्रियतम,
मैं कैसे तुम तक उड़ आऊँ।
तुम बिन प्रिय, कैसे जी पाऊँ...।

मिले न वह बाँहों का झूला।
नयनों का प्रेमासन भूला।
प्रणय चरम का वह स्पंदन-
अब है हमसे आग-बबूला।

हँसते हुए अधर रस प्याले-
बोलो खोज कहाँ से लाऊँ।
तुम बिन प्रिय, कैसे जी पाऊँ....।

ढूँढ़-ढूँढ़ कर प्रिय हम हारे।
पर न मिले स्पर्श तुम्हारे।
मेंहदी से वह रची हथेली-
ढूँढ़ थक गए सावन सारे।

बुझे आस के दीपक से मैं-
कैसे मन का दीप जलाऊँ।
तुम बिन प्रिय, कैसे जी पाऊँ....।

बसंत गीत..!

सखी री लख, विहँसत अंग वसंत।

तरु, पल्लव यौवन गदराया।
मदन महोत्सव भू हर्षाया।
आम्रबौर से सजे कुंज में-
इंद्रधनुष जैसे मुस्काया।
पंचम स्वर में गाए कोयल-
प्रकति को रुप अनंत।
सखी री लख, विहँसत अंग वसंत।।

काम-रती हिय-हिय में डोलैं।
मधुवन बीच पपीहा बोलैं।
नैनन तीर बिंधें उर रसिया-
कुँवरि-कुँवार प्रेम रस घोलैं।
छकि सौरभ अलि टोली गावै,
झूमत सकल दिगंत।
सखी री लख, विहँसत अंग वसंत।।

पी परदेश.. न भेजत पाती।
पिया मिलन को दहकत छाती।
फूटए विरह पीर अँगड़ाई-
प्रणय पिपासा भींचए दाती।
साँझ ढ़ले पथ निरखैं नयना-
अबहूँ न आए कंत,
सखी री लख, विहँसत अंग वसंत।

मार सको तो मारो,....!

बाहर का रावण मर करके, फिर जिंदा हो जाएगा-
मार सको तो मारो अपने, अंदर बैठे रावण को।

गूढ़ अर्थ है विजयपर्व का,
चिंतन जरा सँभालो तो।
मानस का अंतर्संदेशा,
आओ जरा खँगालो तो।
विजय सत्य की थी असत्य पर,
सोचो तो इस कारण को।
मार सको तो मारो अपने,
अंदर बैठे रावण को।

रावण रथी, विरथ थे राघव,
सैन्य शक्ति भी ज्यादा थी।
पर रघुनंदन के अंतस में,
शाश्वत बस मर्यादा थी।
तभी तो लंका झेल न पायी,
रामचंद्र कष्ट निवारण को।
मार सको तो मारो अपने, अंदर बैठे रावण को।

आत्मशक्ति का दीप्त मंत्र ही,
जग में शक्ति साधना है।
कर्मयोग से सदाचार ही,
प्रतिपल हमें बाँचना है।
रसना रटे सदा इस उद्‌भट,
बीजमंत्र उच्चारण को।
मार सको तो मारो अपने, अंदर बैठे रावण को।

यह कभी सोचा न था,...!

देह से दूरी बढ़ेगी,
द्वार पर अनुबंध होगा।
ये कभी सोचा न था अब,
सांस पर प्रतिबंध होगा।

भाव की सब व्यंजनाएं,
परिधि में अभिव्यक्ति होंगी।
कामनाओं की सजल सरि,
बांध से अभिसिक्त होंगी।
वर्जनाओं का सृजन से,
चिंतनी सम्बंध होगा।

विश्व के सब विटप पाहुन,
सोच को बदलाव देंगे।
और नभ छूते पगों को,
पृष्ठ में ठहराव देंगे।
फिर सनातन विज्ञता का,
जगत में मणिबंध होगा।

प्रगति के खग जो उड़े थे,
दंभ के ऊंचे क्षितिज पर।
पंख झुलसाए पड़े हैं,
देख लो कैसे भुमिज पर।
ओ प्रकृति! शरणागतम् मम,
पुनः व्युह स्कंध होगा।

जब भी तेरी याद सतायी,....!

जब भी तेरी याद सतायी, दिल ने हमें उदास किया।
बाँहों ने मसनद को भींचा, तुमको अपने पास किया।

छवि तेरी ज्यों ही गहराई,
नयनों ने पट बंद कर लिए।
पलकों की पहरेदारी ने,
मन के सारे द्वंद हर लिए।
फिर जीवंत हुई श्वाँसों ने-
रातों को मधुमास किया।
बाँहों ने मसनद को भींचा, तुमको अपने पास किया।

ढली निशा अधरों ने सींचे,
अधरों में ले अधर तुम्हारे।
लघु समाधि ने मीत-मिलन के,
वातायन सब खोल उघारे।
मीत हुईं तुम मिलन-मंजरी,
ऐसा प्रणय समास किया।
बाँहों ने मसनद को भींचा, तुमको अपने पास किया।

दूर देश बैठी, ओ सजनी,
कैसे तुम्हें बुलाएँ बोलो।
कैसे शाश्वत प्रेम सुधारस,
तुमको प्रीत पिलाएँ बोलो।
विधना ने ही रचा विरह यह,
सोच हृदय मलमास किया।
बाँहों ने मसनद को भींचा, तुमको अपने पास किया।

ज़िंदगी पीर बन आजमाने लगी,...!

मन हुआ राँझणा, जब किसी हीर में,
जिंदगी पीर बन आजमाने लगी।
बंदिशों की रचा कर हिना! हाथ में,
हीर अपनी हथेली सजाने लगी।

आँख बरसी, बरस कर समन्दर हुई,
ज्वार लेकिन जमाने ने देखा नहीं।
प्यास चातक बनी ताकती रह गई,
स्वाति ने पर लिखा नीर लेखा नहीं।
मन पपीहा बुलाता रहा पी-कहाँ-
दिन ढला, साँझ सुरमा लगाने लगी।

दिल तड़पता रहा, साँस चलती रही,
शूल की सेज पर हम मचलते रहे।
अश्रु के आवरण, आस के आचरण,
व्याकरण करवटों का बदलते रहे।
साधना-साध्य हो उससे पहले ही आ,
विधि-विधानों के दर्पण दिखाने लगी-

प्रेम अहसास दृढ़ है समर्पण लिए,
प्रेम परिरंभ का आचमन तो नहीं।
चाहे जितनी वरें रुक्मिणी श्याम को,
प्रेम का लक्ष्य केवल मिलन तो नहीं।
सिर्फ अनुभूति है प्रेम की व्यंजना-
राधिका हो मुखर यह बताने लगी।

जीवन पथ है कठिन परीक्षा,...!

जीवनपथ है कठिन परीक्षा, किन्तु न हिम्मत हार सखे।
वैतरणी तो पार करेगी, प्रभु की पग-मनुहार सखे।

जो भी आया, गया एक दिन,
भोज रहे या गंगू तेली।
कर्मपथों पर जीवन यात्रा,
सबकी जग में रही अकेली।
साथ गया बस उस अनंत तक,
तेरे कर्म का लेखा-जोखा-
शाश्वत रहा धरा पर केवल, बस तेरा व्यवहार सखे।

गणिका तरी,ऊबारी शबरी,
कुब्जा का उद्धार हुआ।
विदुर,सुदामा और अहिल्या,
सबका बेड़ा पार हुआ।
यद्यपि सत्य यही है बंदे,
धर्मपथों पर शूल बहुत हैं-
कंटकपथ पर चलो धैर्य से- तब होगा उद्धार सखे।

स्वार्थ, द्वेष अरु लिप्सा, तृष्णा,
पल-पल, क्षण-क्षण भरमाएंगी।
आत्ममुग्धता घेर-घेर कर,
भौतिक पथ पर ले जाएगी।
सत्कर्मों के सत्यपथों पर,
पापी दंभ तुम्हें रोकेगा-
किन्तु तुम्हारी ठोकर उसके,
स्वप्न करेगी क्षार सखे, वैतरणी तो पार करेगी,

प्रभु की पग-मनुहार सखे।

तुम पर अपना प्यार लुटाने,...!

तुम पर अपना प्यार लुटाने फिर आऊंगा।
तुमको अपने गीत सुनाने फिर आऊंगा।

सांझ ढल रही, अब जाने दो,
मत रोको पथ मेरा।
रैन बसेरा सी ये दुनिया,
बंजारों का डेरा।
मेरी भी तो नम हैं आंखे, विदा-विदाई लेते-
लेकिन वादा! तुम्हे मनाने फिर आऊंगा।

निश्चित ही मैं प्रेम तुम्हरा,
भूल नहीं पाऊंगा।
रख करके पाषाण हृदय पर,
खुद को समझाऊंगा ।
तुम भी रखना धैर्य,व्यथित मत होना साथी-
तुमको! तुमसे मीत चुराने फिर आऊंगा।

वो तुम ही तो थी जिसने इस,
पत्थर को पिघलाया।
प्यार मिला जब हमको तुमसे,
गीत सृजन कर पाया।
प्यार रह गया कर्ज न देखो ढलकें आंसू-
मीत तुम्हारा कर्ज चुकाने फिर आऊंगा।

हो जा सखि तैयार,...!

हो जा सखि तैयार, रंग भर झोली में।
चल जमुना के पार, नन्द घर होली में।

श्याम पिया मेरा रंग-रंगीला।
मोर मुकुट तन छैल-छबीला।
घेरि सखी निधिवन में उसको,
नर से बना दें नार- पकड़ि हमजोली में।
हो जा सखि तैयार- रंग भर झोली में।

कब से लगन लगी मेरी गुइयां।
श्याम छली से कर गलिबहियां।
बरसाने में घेरि के खेलूं-
प्रेम सहित लठमार, चलें हम टोली में।
हो जा सखि तैयार- रंग भर झोली में।

कुंजगली या वंशी वट पर।
चल ढूंढें कालिंदी तट पर।
मिले जहां भी मेरा कन्हैया,
कर लें सखि मनुहार- शहद रख बोली में।
हो जा सखि तैयार- रंग भर झोली में।

नन्दलाल संग राधा रानी।
महल रंगीली की महरानी।
वहीं युगल चरणन में खेलूं-
होरी लड़ुआ मार ,हिये की खोली में।
हो जा सखि तैयार, रंग भर झोली में।

और मैं ठगा-ठगा, दर्द से सिहर गया,...!

दिल में कुछ गुबार था।
आँख भर खुमार था।
चाँदनी झरी नहीं, चंद्रमा बिखर गया।
और मैं ठगा-ठगा, दर्द से सिहर गया।

पीत-पात हो गये हैं कोंपलों के आज फिर।
पीर कर रही भजन है घोंसलों में आज फिर।
ठग गयी हवा मुझे।
दीप आस के बुझे।
ज्ञात तक न ये रहा कि आशियां किधर गया।

पनघटों से पायलों की रुनझनें चलीं गयीं।
बुलबुलों की कुंज से ही गुनगुनें चली गयीं।
नीति से छले गये।
हाथ बस मले गये।
वो भी घर उजड़ गया, मैं जहाँ-जिधर गया।

शीत चाँदनी में भी तो पाँव मेरा जल रहा।
लक्ष्य खुद खड़ा मुझे हर कदम पे छल रहा।
खुद पे एतबार था।
इश्क़ बेशुमार था।
इसलिए कदम-कदम मैं राह से इतर गया।

कुण्डलिया खण्ड

चिंतन जब गहरा हुआ, खुले हृदय के नैन।
लगे गूँजने कान में, कर्मयोग के बैन।
कर्मयोग के बैन, ज्ञान की जग में थाती।
जहाँ कर्म प्रारब्ध,लक्ष्य की जलती बाती।
अनुपम है मतिमंद, शून्य चेतन, आकिंचन।
फल देगा भगवान, यही है शाश्वत चिंतन।1।

सेवा और सद्भाव का, चला रहे व्यापार।
ज्ञान बाँटते जगत को, घर में माँ लाचार।
घर में माँ लाचार, केक कुत्ते खा जाते।
माँ के पावन अधर, मगर प्यासे रह जाते।
अनुपम चिंतन आज, माँगता तुमसे देवा।
देना इतनी शक्ति, कर सकूँ माँ की सेवा।2।

याचक बनकर कामना, खड़ी सुखों के द्वार।
कर्मपथों से कब रहा, हमको किंचित प्यार।
हमको किंचित प्यार, दंभ की लेकर थाती।
अंतस में है दीप्त, स्वार्थ की अविरल बाती।
अनुपम है सिद्धांत, बनो करुणा के वाचक।
दया, धर्म के साथ, रहो ममता के याचक।3।

कृष्ण रूप की साधिके, राधे, राधेश्याम।
ब्रजमण्डल की लाड़ली, बरसाना श्रीधाम।
बरसाना श्री धाम, लली बृषभानु दुलारी।
नैनन नेह सनेह, बिराजे रासबिहारी।
विनवऊँ अष्ट प्रणाम, आरती युगल भूप की।
अनुपम अपरंपार, कथा है कृष्ण रुप की।4।

मुक्तक खण्ड

जीवन पथ पर,मोह और माया रहने दो।
नयनों में आरूढ़ एक काया रहने दो।
मुझसे मेरा स्वर्ग नहीं बिसराना भगवन-
मुझपर माँ के, आँचल का साया रहने दो।1।

मुस्कुरा कर दर्द भूले गढ़ नए अनुप्रास को।
पोषितो अपने हृदय में नित नए मधुमास को।
पीर की प्रतिमान होकर बाँटती खुशियाँ सतत-
है नमन, नारी तुम्हारे उर सृजित विश्वास को।2।

पतझड़ों की वेदना को मत गहो! मधुमास देखो।
रिक्त मन की चाहना में स्वप्न का विन्यास देखो।
यदि रहा संकल्प सुदृढ़, शूलपथ पुरुषार्थ का तो-
लक्ष्य का संधान कब मुश्किल रहा! इतिहास देखो।3।

चिंतनों को छोड़ तन्हा आप यदि सो जाएंगे।
तो सुनिश्चित स्वप्न सारे आप से खो जाएंगे।
यदि रहा मजबूत बंधन, आपका विश्वास से-
जिंदगी के प्रश्न सारे हल स्वयं हो जाएंगे।4।

मनुज के बुद्धि कौशल का, कुपोषण है नहीं अच्छा।
समझने में कभी भी दृष्टि-दोषण है नहीं अच्छा।
विशेषण शुद्ध हो विश्वास के हर एक पहलू का-
निरर्थक पुस्तकों पर दोष-रोपण है नहीं अच्छा।5।

मैं योद्धा हूं अक्षर कुरु का, समय गंवाना ठीक नहीं।
शब्दों के अपने आयुध को, व्यर्थ चलाना ठीक नहीं।
लेने को जब दान अंगूठा, आचार्यों ने कमर कसी-
तब मेरा भी मुग्धजनों से, प्यार जताना ठीक नहीं।6।

सपनों से अब रोज लुभाते लोग यहाँ।
दीन-हीन का दर्द भुनाते लोग यहाँ।
झोपड़ियों के अश्रुनीर से सींच-सींच के-

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

अनुपम 'आलोक'

चौधराना, पो. बांगरमऊ,
जिला- उन्नाव, उ.प्र.
Email- abcanupam@gmail.com
Mobile - 8840257206

देश में चल रही आपातकाल जैसी इस स्थित के चलते घरों की सीमाओं में महामारी के वायरस का तनाव तो था ही साथ-साथ अंदर रहकर एक घुटन भी धीरे-धीरे कुंठा का रूप ले रही थी।

ऐसे में आशा की एक किरण दिखाई अंतरा शब्द शक्ति ने और फिर क्या, कलम जो मचली तो समय कम पड़ने लगा। मुझे खुशी है कि अंतरा शब्दशक्ति के आवाहन पर मुझे दोहरा लाभ हुआ। सृजन का बहाव तो तेज ही हुआ तथा इस मंच ने हमें कुंठा और निराशा जैसी नकरात्मक शक्तियों से भी मुक्त करा कर मुझे अपने साथ जोड़े रखा।

कोटि-कोटि आभार अंतरा शब्द शक्ति।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क- 9424765259, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-134-3

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/